साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

पंछी बन कर उड़ना चाहा

नाम –आरती
पिता – श्री कर्म बीर
माता –श्रीमती सरोज शर्मा
शिक्षा – एम० ए०,(NET)

---------- पंछी बन कर उड़ना चाहा ----------

--
पंछी बन कर उड़ना चाहा ।
बादलों के संग खेलना चाहा ।।
--
तुफ़ानों ने रोक दिए रास्ते ।
जब मंज़िलों को पाना चाहा ।।
--
हर पल लोगों के नए रंग दिखे ।
मर कर जब ज़ीना चाहा ।।
--
संकरी राहों में भटक गए जब ।
अन्धेरों में रती ने रोशनी को चाहा ।।
--

---------- पतझड़ में पत्ते झड़ ज़ाते है ----------

--
पतझड़ में पत्ते झड़ ज़ाते है ।
तभी बसंत में नए पत्ते आकार लेते है ।।
--
फूल भी अक्सर काँटों की चुभन से सहम जाते है ।
तभी ताजगी बन कर महक पाते है ।।
--
जिंदगी दुखों की परछाई से गिरी है ।
तभी सुख की छाया से जगमगाती है ।।
--
चाँद भी दागों से मलिन रहता है ।
तभी रातों की शीतलता बन पाता है ।।
--
सूरज आग का दरिया है ।
तभी दिन का सवेरा बनता है ।।
--

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 12
December 2016

रात अन्धकारों के दामन से लिपटी है ।
तभी दिन प्रकाश से रोशन हो पाते है ।।